(x) विभिन्न विषयों के लिए हिन्दी 15 पारिभाषिक-शब्दकोशों का निर्माण।

(xi) राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान को 7 विद्यमान संस्कृत विद्यापीठों के अनुरक्षण तथा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के अन्तर्गत ऐसी ही 2 और संस्थाएं खोलने के लिए भी वित्तीय-सहायता दी जा रही है।

(xii) आदर्श संस्कृत महाविद्यालयों/शोध संस्थान सहित लगभग 600 स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों को वित्तीय-सहायता प्रदान की जाएगी।

(xiii) दो, संस्कृत सम-विश्वविद्यालयों अर्थात् लाल बहादुर शास्त्री विद्यापीठ और राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति का अनुरक्षण किया जा रहा है।

(xiv) राज्य सरकारों को संस्कृत शिक्षा के विकास के लिए वित्तीय-सहायता प्रदान की जा रही है।

आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान, भारतीय भाषाओं के संवर्धन, प्रचार और विकास के लिए कुल-आवंटन 66.20 करोड़ रु० है।

Increase in the retail price of sugar for PDS

*250. DR. R. K. PODDAR:
SHRI RAMACHANDRAN PILLAI:

Will the Minister of FOOD be pleased to state:

(a) whether it is a fact that due to IMF pressure Government suddenly took a decision to increase the retaill price of sugar supplied through public distribution system; and

(b) if not, the reasons for the increase in prices?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF FOOD (SHRI KALP NATH RAI): (a) No, Sir.

(b) The increase in the retail issue price of levy sugar supplied through the Public Distribution System was necessitated on account of the increase in the Statutory Minimum Price of sugarcane from Rs. 26 per quintal prevailing during 1991-92 sugar year ending on 30-9-92 to Rs. 31 per quintal for the current sugar year starting on 1-10-92, the increase in conversion cost based on the schedules furnished by the Bureau for Industrial Costs and Prices and the increase in the distribution cost of levy sugar. Further, an ad-hoc increase of 40 paise per kg. has also been provided to recoup the deficits in the Levy Sugar Price Equalisation Fund of the Food Corporation of India pertaining to earlier years. Accordingly, the retail issue price of sugar has been enhanced to Rs. 8.30 per Kg with effect from 17.2.93 from the earlier level of Rs. 6.90 per kg.

Shiva Temple at Bhojpur in M.P.

*251. SHRI O. RAJAGOPAL: Will the Minister of HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT be pleased to state:

(a) whether the Archaeological Survey of India has formulated any plan for the renovation and development of area around the ancient Shiva temple at Bhojpur near Bhopal;

(b) if so, what are the details in this regard;

(c) what allocation has been made for this work during 1992-93 and 1993-94; and

(d) whether the amount is sufficient to meet the developmental activities of the temple and by when the renovation/development work is likely to be completed?

THE MINISTER FOR HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (SHRI ARJUN SINGH): (a) The Archaeological Survey of India is conserving the Shiva Temple, Bhojpur while the State Government is developing it as a tourist centre.

(b) The conservation works, taken up on Shiva Temple, Bhojpur include:

(i) Restoration of missing steps of the Jagati.

(ii) Restoration of damaged and missing veneer stones.

(iii) Restoration of damaged balconies and covering of the roof.

The State Government has provided camping facilities near the monument. The existing approach road is being improved and the envirous of the Temple are being developed by plantation.

(c) The allocation of funds for the conservation works for the year 1992-93 is Rs. 1.65 lakhs while the allocation proposed for 1993-94 is Rs. 3.00 lakhs.

(d) The conservation of Shiva Temple Bhojpur is a continuous process. Several steps towards conservation are taken up as per the actual needs and the availability of funds. Developmental works around the monument are being done by the State Government.

सरसों का बुआई क्षेत्र

*252. **श्री मूलचन्द मीणा :**
श्री मुहम्मद मसूद खान :

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) इस समय राज्यवार कुल कितने एकड़ भूमि पर सरसों की खेती की जाती है;

(ख) क्या सरकार किसानों को उनकी सरसों की फसल को लगी विभिन्न बीमारियों से हुए नुकसान के लिए राहत प्रदान करने का विचार रखती है; और

(ग) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ?

गैर-पारम्परिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय में राज्य मंत्री और कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री का अतिरिक्त प्रभार (श्री एस० कृष्ण कुमार) : (क) विगत तीन वर्षों (1989-90, 1990-91 तथा 1991-92) के दौरान सरसों की खेती के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र का राज्यवार विवरण संलग्न तालिका में दिया गया है (नीचे देखिए) 1992-93 के दौरान, सरसों के कवरेज का अस्थायी अनुमान 66.4 लाख हेक्टेयर है।

(ख) और (ग) फसल मौसम 1992-93 के दौरान, राजस्थान के अलवर तथा भरतपुर जिलों तथा हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में व्हाईट रस्ट के प्रकोप के कारण सरसों की फसल प्रभावित हुई है। मौसम परिस्थितियों के कारण नवम्बर के दूसरे पखवाड़े से दिसम्बर के पहले पखवाड़े तक इस रोग में तेजी से वृद्धि हुई। राजस्थान, उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा म फसल को हुई क्षति का अनुमान उपलब्ध नहीं है। राजस्थान के अलवर तथा भरतपुर जिले मे 22,000 हेक्टेयर क्षेत्र में रोग के 5 से 10% प्रकोप का अनुमान है।

भारत सरकार तिलहन उत्पादन कार्यक्रम के तहत राज्यों को कीटों तथा रोगों के नियंत्रण हेतु 100/- रु० प्रति हेक्टेयर की दर से सहायता प्रदान करती है। इस उद्देश्य के लिए राज्यों को पर्याप्त धनराशि उपलब्ध कराई गई है। राज्य के कृषि विभाग ने फफूंदनाशियों की सप्लाई के माध्यम से रोग का विस्तार रोकने के सभी संभव प्रयास किए।